International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 11, Nov 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उत्तर प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थलों का ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सर्वेक्षण: एक अध्ययन

Vijay Kumar, Research Scholar, Department of History,
M.M. College, Modinagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh.

Dr. Sunita Sirohi,Supervisor, Department of History,
M.M. College, Modinagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh.

भारत देश बौद्ध धर्म की जन्मभूमि रहा है और उत्तर प्रदेश राज्य इस धर्म की ऐतिहासिक यात्रा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भगवान बुद्ध के जीवन की चार प्रमुख घटनाएं जन्म, ज्ञान प्राप्ति, प्रथम उपदेश और महापरिनिर्वाण अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। ये चारों घटनाएं क्रमशः— लुंबिनी (नेपाल), बोधगया (बिहार), सारनाथ (वाराणसी) और कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)[1] से जुड़ी हैं। अतः इनमें से दो स्थल (सारनाथ और कुशीनगर) उत्तर प्रदेश में स्थित हैं। यही नहीं, इसके अतिरिक्त श्रावस्ती, कौशांबी, संकिसा, पिपरहवा, आदि स्थल भी महात्मा बुद्ध की जीवन-गाथा से सीधे जुड़े हैं।[2] जिसकी पुष्टि बहुत से ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य करते हैं। अतः इन स्थलों पर पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त अवशेष (मठ , स्तूप और विहार) उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म के प्रचार – प्रसार एवं प्रभाव को प्रस्तुत करते हैं।

1. सारनाथ:-

सारनाथ, वाराणसी के उत्तर-पूर्व में स्थित भारत का एक अत्यंत प्राचीन, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल है। वाराणसी जनपद से इस स्थल की दूरी 6.4 किलोमीटर है।[3] सारनाथ को प्राचीन ग्रंथों में कई नामों से जाना गया है। जैसे — मृगदाव, मृगदाय, ऋषिपत्तन, इसिपतन (पाली साहित्य), सारंगनाथ आदि। इस स्थान को मृगदाव इसलिए कहा गया क्योंकि यहाँ प्राचीन समय में घने वन में मृगों का निवास था।[4] जबकि ऋषिपत्तन' का अभिप्राय है — "ऋषियों का निवास-स्थान"। इन दोनों ही अर्थों से स्पष्ट है कि बुद्ध के आगमन से पूर्व यह स्थल एक शांत, प्राकृतिक और तपोभूमि के रूप में प्रसिद्ध था। इसके अतिरिक्त सारनाथ वही स्थान है जहां बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद प्रथम उपदेश दिया था इसी घटना को बौद्ध साहित्य में धर्मचक्रप्रवर्तन के नाम से जाना जाता है। यह उपदेश पाँच भिक्षुओं—कोंडञ्ञ, वप्पा, भद्दिया, महानामा और अस्सजिको दिया गया था।[5] महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में अपने उपदेशों में चार आर्य सत्य, मध्य मार्ग, अष्टांगिक मार्ग आदि का उपदेश दिया था।[6] ये वही पांचो शिष्य थें जो उनको उरुवेला मे छोड़कर वाराणसी आ गए थे। सारनाथ में ही महात्मा बुद्ध ने धम्म तथा संघ की स्थापना की थी।[7] कलिंग युद्ध के पश्चात् (261 ई.पू.) मौर्य सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया था और बौद्ध धर्म को राजधर्म घोषित करके इसके प्रचार-प्रसार के लिए संपूर्ण भारतवर्ष में स्तूपों, विहारों तथा स्तंभों का निर्माण कराया। सम्राट अशोक ने स्वय सारनाथ की यात्रा की थी और यहां पर 84000 स्तूपों का निर्माण करवाया था। इसके पश्चात कनिष्क ने भी सारनाथ में अनेकों विहारोंवस्तूपों का निर्माण करवाया। गुप्त काल व वर्धन क़ाल में भी बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया गया।[8] परंतु भारत पर हुए विदेशी आक्रांताओं के प्रभाव के कारण इस क्षेत्र को अत्यधिक क्षति भी उठानी पड़ी इसके पश्चात गडहवाल शासक गोविन्दचंद्र की पत्नी रानी कुमार देवी ने भी सारनाथ में विहार का निर्माण कराया था। पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त अभिलेख इसकी पुष्टि करते हैं।[9]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 11, Nov 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारनाथ का पुरातात्विक सर्वेक्षण —— सारनाथ क्षेत्र का पुरातात्विक उत्खनन सबसे पहले 1815 ईस्वी में कर्नल मेकेंज ने करवाया,[10] इसके पश्चात 1835 – 1836 में अलेक्जेंडर कनिंघम ने सारनाथ का बड़े स्तर पर उत्खनन कराया और इस क्षेत्र से धार्मिक स्तूप , चौखंडी स्तूप , व मध्यकालीन विहारों को खोद निकाला और यहां से प्राप्त बहुत से पूरावशेषों (पत्थर के टुकड़े, मूर्तियां) को कोलकाता के संग्रहालय में संरक्षित किया गया।[11]अलेक्जेंडर कनिंघम को धमेक स्तूप से एक अंकित शिलापट्ट प्राप्त हुआ। यह 3फुटनीचे उत्खनन से प्राप्त हुआ । अंकित लेख क़े अनुसार यह शिलापट्ट 600 ई. के आसपास क़ा है। उत्खनन से प्राप्त शिलापट्ट का माप 43 इंच × 18.75 इंच × 13 इंच (लंबाई × चौड़ाई × मोटाई) हैं ।[12] 1951 – 1952 में मेजर किटोई ने तथा इसके पश्चात एडवर्ड थॉमस[13] व प्रो. फिट्स एडवर्ड हॉर्न[14] आदि नें सारनाथ स्थल के उत्खनन को जारी रखा। इसके पश्चात एच. वीं. ओरटल इस क्षेत्र का बड़े स्तर पर उत्खनन करवाया और यहां से मुख्य मंदिर, अशोक स्तंभ व बहुत सी मूर्तियां व शिलालेख (बोधिसत्व की विशाल लेखांकित मूर्तियां, आसनस्थ बुद्ध की मूर्ति, अवलोकितेश्वर बोधिसत्व मंजूश्री नीलकंठ की मूर्तियां तारा वसुंधरा आदि की प्रतिमाएं) खोज निकाले।[15] पुरातत्व विभाग के निर्देशक सर जान मार्शल ने 1907 ई. में स्टैन कोनो तथा दयाराम साहनी के साथ मिलकर सारनाथ के उत्तर दक्षिण क्षेत्र को उत्खननित किया तथा तीन कुषाण कालीन मठो को खोज निकाला।[16] इसके अतिरिक्त बहुत से पूरा अवशेष भी खोज निकाले जिसमें कुमार देवी क़ी लेखयुक्त प्रतिमाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उत्खनन से प्राप्त अवशेषों को कोलकाता संग्रहालय में सुरक्षित किया गया। हरग्रीवस् क़े द्वारा भी 1914 – 1915 ई. में इस क्षेत्र का उत्खनन किया गया तथा उत्खनन से मौर्य कासे लेकर मध्यकाल तक की अनेकों वस्तुएं खोज निकाली गई।[17] इस क्षेत्र का अंतिम उत्खनन दयाराम साहनी के द्वारा किया गया तथा दयाराम साहनी को यहां से 9 ½ इंच लंबी, 2 फुट 7 इंच चौड़ी तथा 3 फीट गहरी एक नाली के साक्ष्य मिले।[18]

धमेख स्तूप (धर्मचक्र स्तूप) —— इस स्तूप की नींव सम्राट अशोक के द्वारा रखी गयी थी परंतु यह विस्तारित कुषाण काल में तथा पूर्ण रूप से तैयार गुप्त काल में हुआ । मध्यकाल में विदेशी आक्रांता के समय नष्ट होने के बाद 1026 ई० में पालकालीन सम्राट महिपाल ने धार्मिक धरोहरों को पुनर्जीवित करने का अभियान चलाया। उनकी प्रेरणा से स्थिरपाल और वसंतपाल ने नामक दो भाइयों नें काशी के अनेक देवालयों, धर्मराजिका स्तूप, और धमेक स्तूप (धर्मचक्र) का पुनर्निर्माण व उद्धार कराया।धमेख स्तूप (धर्मचक्र स्तूप) देखने में एक ठोस गोलाकार बुर्ज की समान प्रतीत होता है । जिसका व्यास 28.35 मीटर (93 फुट) और ऊँचाई 39.01 मीटर (143 फुट) है। सबसे पहले कनिंघम ने धमेख स्तूप का उत्खनन कराया और यहाँ से 0.91 मीटर (3 फुट) नीचे एक शिलापट्ट प्राप्त किया था। धमेख स्तूप में प्रयुक्त ईटें 14.5 इंच (लंबाई) × 2.33 इंच (मोटाई) आकार की हैं । जो उत्खनन से प्राप्त हुई है।[19] कनिंघम के अनुसार धमेख शब्द को संस्कृत भाषा के शब्द 'धर्मोपदेशक' से लिया गया है।[20] उल्लेखनीय है कि बुद्ध ने सर्वप्रथम यहाँ धर्मचक्र' प्रारंभ किया था। इसलिए हो सकता है इसका नाम धमेख पड़ा गया होगा। वर्तमान समय में भी बौद्ध अनुयायी बड़ी सम्मान की दृष्टि से धमेख स्तूप कों देखते हैं और पूजा करते हैं । धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा में भी भगवान बुद्ध की अनेकों मूर्तियां सारनाथ से प्राप्त होती है। जो पुरातात्विक दृष्टि से अध्ययन महत्वपूर्ण कलाकृतियां मानी जाती है ।

चौखण्डी स्तूप —— चौखंडी स्तूप धमेख स्तूप से आधा मील की दूरी पर दक्षिण में स्थित हैं। यह वही स्थान है जहां गौतम बुद्ध ने अपने पाँच शिष्यों को सबसे प्रथम उपदेश सुनाया था जिसके स्मरणस्वरूप इस स्तूप का निर्माण किया गया थाहेनसांग के अनुसार चौखंडी स्तूप सारनाथ से 0.8 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित है, इसकी ऊंचाई 91.44 मीटर थी।[21] चौखंडी स्तूप के ऊपर एक अष्टकोणीय बुर्जी निर्मित है तथा स्तूप के उत्तरी द्वार पर स्थित पत्थर पर फारसी भाषा में एक लेख अंकित है जिससे पता चलता है कि इसक़ा निर्माण गोवर्धन (टोडलमल क़े पुत्र) द्वारा 1589 ईस्वी मे किया गया था। इसके अतिरिक्त मुगल शासक़ हुमायूं द्वारा भी यहां पर रात व्यतीत की गई थीं।[22] इस बात का प्रमाण भी यहीं पर अंकित लेख है।सर्वप्रथम अलेक्जेण्डर कनिंघम (1836 ई०) नें उसके बाद श्री आरेटेल (1905) ने

इसका उत्खनन किया और यहां से कुछ मूर्तियाँ, स्तूप की अठकोनी चौकी और चार गज ऊँचे चबूतरे खोज निकाले थें । अतः चबूतरे का ऊपरी भाग में प्रयुक्त ईंटें 12 इंच × 10 इंच × 2¾ इंच तथा 14¾ इंच × 2¾ इंच आकार की हैं इसके अतिरिक्तचबूतरे का निचला भाग मे प्रयुक्त ईटे 14½ × 9 × 2½ इंच की प्राप्त हुई है।[23]

धर्मराजिका स्तूप —— सारनाथ में स्थित धर्मराजिका स्तूप क़ा निर्माण भी सम्राट अशोक के द्वारा कराया गया था। यहां पर उत्खनन होने पर 8.23 मीटर की गहराई पर एक प्रस्तर पात्र के भीतर संगमरमर की मंजूषा में कुछ हड्डियों एवं सुवर्णपत्र, मोती के दाने एवं रत्न मिले थे, जिसे उन्होंने विशेष महत्व का न मानकर गंगा में प्रवाहित कर दिया गया था। अशोक के समय में इसका व्यास 13.48 मीटर (44 फुट 3 इंच) था। यहां से प्राप्त ईटे 19 ½, × 14 ½ × 16 ½ माप क़ी हैं। परंतु बाद में कुषाण काल या गुप्तकाल में इसका पुनः विकास हुआ था। और इस दौरान स्तूप में प्रयोग की गई ईटो क़ी माप 17 × 10½ × 2¾ इंच क़ी हैं।

मूलगंधकुटी विहार (मुख्य मंदिर) —— मूलगंधकुटी विहार (मुख्य मंदिर) धर्मराजिका स्तूप से उत्तर दिशा में स्थित हैं। चीनी यात्री हेनसांग ने इसका वर्णन 200 फुट ऊँचे मूलगंधकुटी विहार के रूप में किया है।[24] स्थापत्य, अलंकृत ईटों की सज्जा शैली के आधार पर मूलगंधकुटी विहार (मुख्य मंदिर) का निर्माण गुप्त काल में निर्मित हुआ प्रतीत होता है।[25] मूलगंधकुटी विहार के बीचो-बीच मंडप निर्मित है जहाँ पहले भगवान बुद्ध की एक सोने की चमकीली आदमकद मूर्ति स्थापित थी। मूलगंधकुटी विहार (मुख्य मंदिर) में प्रवेश हेतु तीनों दिशाओं के आधार पर तीन दरवाजे निर्मित किए गए है पूर्व दिशा में मुख्य प्रवेश द्वार (सिंह द्वार) देखने को मिलता है।

अशोक स्तम्भ —— यह स्तंभ मूलगंध कुटी विहार के पश्चिम दिशा में स्थित है। यह स्तंभ भी अशोक कालीन है अशोक स्तंभ की ऊंचाई प्रारंभ में 17.55 मीटर (55 फुट) थी। वर्तमान समय में इसकी ऊँचाई केवल 2.03 मीटर (7 फुट 9 इंच) देखने को मिलती है। अशोक स्तम्भ का ऊपरी सिरा अब सारनाथ संग्रहालय में संरक्षित हैं इस स्तंभ पर तीन लेख भी देखने को मिलते हैं जो अशोक कालीन हैं और ब्राह्मी लिपि में अंकित हैं। यह एक चूना-पत्थर निर्मित स्तंभ है। इसके शीर्ष पर चार सिंह खड़े थें। जो चारों दिशाओं में मुख किए हुए थें। नीचे धर्मचक्र और पशु प्रतीक (हाथी, घोड़ा, बैल, सिंह) अंकित हैं। अशोक स्तंभ के शीर्ष पर स्थित सिंह-मुकुट आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है।

2. कुशीनगर :-

कुशीनगर भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थल एवं जिला है।कुशीनगर जिले की सीमाएँ उत्तर में नेपाल के तराई क्षेत्र, दक्षिणी में गोरखपुर जिला से, पूर्व में देवरिया जिलें एवं बिहार से एवं पश्चिम में महराजगंज एवं गोरखपुर से मिलती हैं। कुशीनगर का इतिहास अत्यन्त प्राचीन व गौरवशाली रहा हैं। कुशीनगर में ही महात्मा बुद्ध नें अपना अंतिम उपदेश देने के बाद महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था। बौद्ध साहित्य में इसे अनेकों नाम से जाना जाता है जैसे कुशीनारा, कुशीनगर, कुशीग्राम आदि। इसके अतिरिक्त चीनी यात्री फाहियान और ह्वेनसांग के विवरणों में कुशीनगर का विस्तृत उल्लेख देखने कों मिलता है। महाजनपद काल में भी कुशीनगर नें ही मल्ल महाजनपद की राजधानी का प्रतिनिधित्व किया था।

कुशीनगर का पुरातात्विक सर्वेक्षण — मुख्य स्तूप ——— कुशीनगर के मुख्य स्तूप का उत्खनन 1876 में सबसे पहले कार्लाइल के द्वारा किया गया इसक़े निर्माण क़ा श्रेय भी अशोक कों हीं जाता हैं।[26] ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है इसकी ऊँचाई 200 फुट के आसपास थी। जबकि कार्लाइल ने शिखर सहित 150 फुट ऊंचाई का बखान किया है। 1910 ईस्वी में हीरानंद शास्त्री जी के निर्देशन में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 11, Nov 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्तूप का पुनः उत्खनन आरंभ हुआ और कुछ नक्कशीदार ईंटे तथा जयगुप्त नामक शासक का तांबे का सिक्का खोज निकाला गया।[27] इसके अतिरिक्त उत्खनन से 14 फीट नीचे ईंटों का एक वृताकार कक्ष मिला। जिसकी ऊँचाई और व्यास 0.64 मीटर (2) फुट 1 इंच) हैं।[28]

परिनिर्वाण मंदिर —— परिनिर्माण मंदिर मुख्य स्तूप के पश्चिम में स्थित था। 1876 में कार्लाइल नें सबसे पहले इस मंदिर और परिनिर्वाण प्रतिमा को खोज की थी। कार्लाइल को ऊँची दीवारें सहित छत विहीन अवशेष प्राप्त हुए थे जिसमें केवल एक प्रवेश कक्ष और गर्भगृह था। कार्लाइल को इस टीले के गर्भग्रह को उत्खननित करने पर ऊँचे सिंहासन पर तथागत बुद्ध की 20 फुट (6.1 मीटर) लम्बी परिनिर्वाण मुद्रा की प्रतिमा प्राप्त हुई। यह प्रतिमा बलुआ पत्थर से निर्मित है । प्रतिमा में बुद्ध को पश्चिम दिशा की तरफ मुख करके लेटे हुए दिखाया गया हैं। इसका सिर उत्तराभिमुख है, दाहिना हाथ सिर के नीचे और बाँया हाथ जंघे पर स्थित है। पैर एक-दूसरे के ऊपर है। यह प्रतिमा कों ईंटों से निर्मित सिंहासन पर स्थापित किया गया था। प्रतिमा का सिंहासन 24 फुट लम्बा तथा 5 फुट 6 इंच चौड़ा था। सिंहासन पट्टियों से सुसज्जित था । सिंहासन के अग्र भाग में तीन शोक संतप्त मूर्तियाँ है। इसके अतिरिक्त सिंहासन के नीचे पाँचवी शताब्दी का लेख अंकित है। उत्कर्ण लेख से यह जानकारी स्पष्ट होती है की परिनिवाण मूर्ति का प्रतिष्ठापक हरिबल नामक व्यक्ति था। मंदिर की दीवार की मोटाई 3.05 मीटर और गर्भगृह की लम्बाई-चौड़ाई 8.35 X 3.66 मीटर थी। प्रवेश कक्ष की लम्बाई 10.92 मीटर तथा चौड़ाई 4.57 मीटर थी।

माथा कुंवर मंदिर —— महापरिनिर्वाण स्तूप से 300 मीटर की दूरी पर दक्षिण पश्चिम की दिशा में माथा कुंवर मंदिर स्थित है यही वह स्थान है जहां महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था।[29] इसका प्रारम्भिक उत्खनन 19वीं सदी में ब्रिटिश पुरातत्वविद कार्लाइल के द्वारा कराया गया था। इस मंदिर की प्रमुख विशेषता यह है कि भूमि-स्पर्श मुद्रा में बुद्ध की लगभग 3.05 मीटर ऊँची शिला-मूर्ति प्राप्त हुई है । यह प्रतिमा काले पत्थर (गया क्षेत्र) से बनी है।[30] पूरी प्रतिमा एक ही विशाल शिला पर उत्कीर्ण है यह इसकी उत्कृष्ट शिल्पकला को दर्शाती है। पीठिका के दोनों ओर सिंहों की आकृतियाँ निर्मित हैं। बीच में उपासिकाएँ (भक्त स्त्रियाँ) उत्कीर्ण हैं। वेदी पर उल्टे मे कमल पुष्प (उल्टा कमल) अंकित है। बुद्ध भूमि-स्पर्श मुद्रा में बैठे हैं — दाहिना हाथ धरती को स्पर्श करता हुआ दर्शाया गया है।प्रतिमा के ऊपर प्रभामंडल बनाया गया है। चारों ओर देव-प्रतिमाएँ उत्कीर्ण है जैसे – सूर्य, चन्द्र, इन्द्र, यक्ष आदि। प्रतिमा की पादपीठिका पर अंकित एक लेख 11वीं शताब्दी का है। इस लेख से पता चलता है कि मूर्ति और मन्दिर दोनों का निर्माण 11वीं–12वीं शताब्दी में किसी स्थानीय कलचुरी नरेश ने कराया था।[31]

रामाभार स्तूप —— कुशीनगर के ऐतिहासिक परिदृश्य में रामाभार स्तूप का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह वही पवित्र स्थल है जहाँ गौतम बुद्ध का अंतिम संस्कार किया गया था। इसे प्राचीन बौद्ध ग्रंथों में "मुकुटबन्धन चैत्य",[32] "मल्लों का चिता-स्थल", या "चिता-स्मारक" के रूप में वर्णित किया गया है। इसी के पास रामाभार झील भी देखने को मिलती है झील के नाम पर स्तूप का नाम रामाभार स्तूप पडा था। स्थल का पहला उत्खनन राजकीय कर्मचारी तथा दूसरा उत्खनन हीरानंद शास्त्री के निर्देशन में 1910 कों हुआ। स्तूप क़ी नीव का व्यास 115 फिट और ऊपर क़ा व्यास 112 फुट है।[33] खुदाई कार्य के दौरान शास्त्री जी (पुरातत्वविद) को लगभग, 1.52 मीटर नीचे ईंटों से निर्मित एक दीवार के अवशेष प्राप्त हुए। यह दीवार स्पष्ट रूप से किसी प्राचीन संरचना का हिस्सा प्रतीत होती है। दीवार के साथ कोई मृदभांड, सिक्का या शिलालेख नहीं मिला, ईंटों के आकार और प्रकार से भी कोई स्पष्ट काल-चिह्न की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं होती है, अतः कुशीनगर के पुरातात्विक अवशेषों में रामाभार स्तूप केंद्र बिंदु की भूमिका निभाता है।

3. श्रावस्ती / सहेत-महेत:-

श्रावस्ती स्थल महात्मा बुद्ध के जन्म से भी अत्यंत प्राचीन हैं। रामायण महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथो मे भी इसका उल्लेख देखने कों मिलता हैं । प्राचीन ग्रंथों में श्रावस्ती ‘ सावत्थी ’ के नाम से वर्णित है । जो पाली भाषा का अपभ्रंश हैं । महाजनपद काल में श्रावस्ती कोसल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 11, Nov 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रदेश की उत्तरी राजधानी का प्रतिनिधित्व करती थीं। बौद्ध काल में यहाँ के शासक राजा प्रसेनजित थें। जो बौद्ध अनुयायी थें। वर्तमान समय मे श्रावस्ती का प्राचीन नगर सहेठ– महेठ के खंडहरों के रूप में विद्यमान है वर्तमान समय में प्राचीन नगर श्रावस्ती का कुछ भाग बहराइच जनपद में तथा कुछ भाग गोंडा जनपद में देखने को मिलता है।[34]

श्रावस्ती का पुरातात्विक सर्वेक्षण — सहेत (जेतवन विहार) —— यह जेतवन महाविहार का क्षेत्र माना जाता है। यहीं बुद्ध ने 25 वर्षा-वास पूरे किए थें। इसके संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत में मिलती हैं जिसमें वर्णित है की श्रावस्ती के एक व्यापारी सुदत्त (अनाथपिंडिक) जो महात्मा बुद्ध का अनुयायी था उसने कोशल नरेश प्रसेनजित के पुत्र जेत से भारी मूल्य देकर उसके उद्यान को खरीद लिया था और यहां महात्मा बुद्ध के आवास हेतु एक़ विहार का निर्माण कराया था। जिसे जेतवन महाविहार के नाम से जाना गया था। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार— अनाथपिंडिक ने सोने के सिक्कों से पूरी भूमि को ढककर यह भूमि प्राप्त की थीं।

मूलगंधकुटी ——यह जेतवन का सबसे पवित्र स्थल माना जाता है जहाँ स्वयं बुद्ध निवास करते थे। वर्तमान समय में यहां पुरातात्विक दृष्टिकोण से ईंटों की बनी आयताकार संरचना, बहु-स्तरीय निर्माण (मौर्य, कुशाण और गुप्त कालीन परतें) इसके अतिरिक्त प्रवेश मार्ग, आधार-दीवारें और परकोटा के अवशेष तथा कई बार जीर्णोद्धार के चिह्न देखने को मिलते हैं वर्तमान समय में भी यह स्थान बौद्ध अनुयायियों द्वारा पूजनीय है।

कोशाम्बक तथा संघाराम — यह वह स्थान था जहाँ संघ के भिक्षु रहते और ध्यान करते थे। वर्तमान समय में यहां पुरातात्विक दृष्टिकोण से ऊँचे विहारों के साथ कमरों के अवशेष, स्नानागार, कुएँ और जल-प्रणाली जैसी आदि विशेषता देखने को मिलती है।[35]

"आनन्द बोधिवृक्ष"—— परंपरा है कि बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद आनन्द ने बोधगया के मूलबोधिवृक्ष की एक शाखा यहाँ रोपित की थी। वर्तमान समय में यहाँ पुरातात्विक दृष्टिकोण से एक विशाल वृक्ष के चारों ओर पत्थर का गोल चबूतरा, वृक्ष को सुरक्षा हेतु लोहे के विशाल खंबे भी देखने को मिलते हैं। इसके अतिरिक्त भी यहां से और भी अनेकों महत्वपूर्ण पुरातात्विक अवशेष देखने को मिलते हैं जैसे - मुख्य स्तूप , आंगुलिमाल स्तूप, कोशल नरेश प्रसेनजित द्वारा निर्मित स्तूप, बुद्ध के जीवन के प्रसंगों से जुड़े चैत्य-विहार, कुषाण गुप्तकालीन ईंटें आदि।[36]

4. साकांश्य (संकीसा):-

साकांश्य / संकीसा, उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद ज़िले में स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण बौद्ध तीर्थ स्थल है। महात्मा बुद्ध इस स्थल पर 522 ईसा पूर्व में श्रावण (अगस्त) मास की पूर्णिमा के दिन पधारे थे। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, यह वही पवित्र स्थान है जहां भगवान बुद्ध अपनी माता मायादेवी को धर्मोपदेश देने के बाद त्रायस्त्रिंश स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरण हुए थें। महात्मा बुद्ध तीन माह (श्रावण, भाद्रपद, आश्विन) तक वर्षावास करने के बाद आश्विन पूर्णिमा के दिन पुनः पृथ्वी पर अवतरण हुए थें। इसके अतिरिक्त यहीं पर अपने प्रिय शिष्य आनंद के कहने पर महात्मा बुद्ध ने भिक्षुणी उत्पलावर्मा को दीक्षित करके बौद्ध संघ में महिलाओं के लिए प्रवेश द्वार खोल दिए थें। चीनी यात्री फाह्यान नें भी 5वीं शताब्दी में भारत के प्रमुख बौद्ध स्थलों का भ्रमण किया था।[37] तथा उसने भी अपने विवरण में साकांश्य / संकीसा कों एक़ पवित्र स्थान बताया हैं। फाह्यान ने अपने यात्रा वृतांत में यहां पर उपस्थित सैकड़ो छोटे-छोटे स्तूप, संघाराम बौद्ध विहार का विस्तृत वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त चीनी यात्री फाह्यान भी बुद्ध के पृथ्वी अवतरण स्थल को चिह्नित करता है। उसके अनुसार इस समय तक केवल सात आरोह शेष बचे थे। तथा इसके बाद आए भ्रमणकारी ह्वेनसांग ने भी 7वीं शताब्दी में साकस्य के विस्तृत अवशेष—विशाल स्तूप, स्तंभ और विहारों—का वर्णन किया हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 11, Nov 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साकांश्य (संकीसा) के पुरातात्विक स्थल —— पुरातत्व विभाग के निर्देशक सर अलेक्जेंडर कनिंघम नें 1876 ईस्वी में चीनी यात्री फाह्यान, ह्वेनसांग क़े यात्रा वृतांतों के आधार पर इसी स्थान को साकांश्य (संकीसा) के रूप में चिन्हित किया है तथा यहां से बहुत से पुरातात्विक अवशेष खोज निकाले जो इस संबंध में बहुत सी बातों की पुष्टि करते हैं।

साकांश्य (संकीसा) से अशोक स्तंभ की प्राप्ति — चीनी यात्रियों के विवरणों में वर्णित है कि मौर्य काल में सम्राट अशोक ने साकांश्य (संकीसा) में एक विशाल स्तंभ का निर्माण कराया था। स्तंभ पर स्थापित सिंह-प्रतिमा आज भी देखी जा सकती है परंतु निचला हिस्सा अभी तक भी प्राप्त नहीं हुआ है। देखने में प्राप्त यह प्रतिमा हाथी की प्रतीत होती है। जिसका सूंढ़ नष्ट हो चुका है। इसके साथ-साथ प्रतिमा पर विभिन्न आकृतियों भी अलंकृत है जैसे कमल, बोधि वृक्ष के पत्ते आदि। इसके अतिरिक्त यहां से बड़ी संख्या में मूर्तियां, सीले, सिक्के , भी प्राप्त हुई है।

साकांश्य (संकीसा) से अभिलेख प्राप्ति –यहां क़े उत्खननित टीलों से 11 × 6 इंच ईंटे प्राप्त हुई है। जिस पर दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का एक लेख अंकित है जो ब्राह्मी लिपि में लिखित है। अभिलेख की भाषा प्राकृत है। इसमें भार्गव में खटीक के पुत्र जेठ द्वारा दान दिए जाने का वर्णन मिलता है।[38]

चौखंडी स्थल — साकांश्य के पूर्व में लगभग दो फलांग की दूरी पर स्थित चौखण्डी नामक स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण है। चौखण्डी के ठीक दाहिनी ओर स्थित स्थल को पन्थवाली कहा जाता है। दक्षिण में नीवी–का–कोट नामक स्थल है। अतः चौखण्डी, पन्थवाली, नीवी-का-कोट और अन्य आसपास के स्थल साकांश्य की प्राचीन बौद्ध बस्ती और विहारों के अवशेषों से भरे पड़े हैं। यहाँ मिली बड़ी-आकार की ईंटें, स्तंभ और अन्य पुरावशेष बताते हैं कि यह क्षेत्र मौर्य–शुंग–कुषाण , गुप्त अवधि में अत्यंत समृद्ध धार्मिक केंद्र था।

5. कौशांबी :-

महाजनपद काल में कौशांबी वत्स महाजनपद की राजधानी के रूप में वर्णित है। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार गौतम बुद्ध ने अपना नवां वर्षावास (520 ईसा पूर्व) यहीं व्यतीत किया था। कौशाम्बी में बौद्ध परंपरा क़े प्रचार प्रसार का सबसे बड़ा आधार प्रसिद्ध व्यापारी सेठ घोसिताराम थें। इन्होंने हीं बुद्ध के आगमन का समाचार मिलने पर यमुना नदी के किनारे एक विशाल विहार बनवाया था। इसीलिए उसे विहार का नाम घोषिताराम विहार पड़ गया था इतिहास में वर्णित है कि यह विहार लगभग 10,000 भिक्षुओं को समायोजित करने में सक्षम था।[39] वर्तमान समय में भी यह विहार कौशाम्बी की महान बौद्ध विरासत का सबसे प्रमुख चिन्ह है। बुद्ध के समकालीन कौशाम्बी क़े शासक राजा उदयन थें। वे बौद्ध धर्म के प्रति गहरी श्रद्धा रखते थें और उन्होंने अपने पुत्र राजकुमार बोधि को भी बौद्ध धर्म से दीक्षित कराया था। राजकीय संरक्षण मिलने से कौशाम्बी बौद्ध धर्म क़े प्रचार प्रसार का प्रमुख केंद्र बन गया था ।घोसिताराम विहार के अतिरिक्त कौशाम्बी में और भी कई महत्वपूर्ण बौद्ध उद्यान और विहार निर्मित किए गए, जिनमें प्रमुख हैं — कुक्कुटाराम, पावारिकाराम, बद्रीकाराम विहार आदि। ये स्थान भी बुद्ध के प्रवचनों, चर्चाओं और ध्यान साधना के लिए प्रसिद्ध थे। इन स्थलों में अनेक दानशील व्यापारियों और गृहस्थों ने संघ की सहायता की थीं ।इसके पश्चात मौर्य काल में सम्राट अशोक ने भी बौद्ध धर्म क़े प्रति गहरी श्रद्धां रखते हुए ही बौद्ध स्मृतियों को संरक्षण देने के लिए कौशांबी में नए स्तूपों का निर्माण और पुराने स्तूपों का पुनर्निर्माण करवाया। कौशांबी अभिलेख से ज्ञात होता है की सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार हेतु यहां पर धर्म महापात्राओं की भी नियुक्ति की थी ।[40] इसके अतिरिक्त सम्राट अशोक की पत्नी कारूवाकी ने भी यहां आम्रवाटिका, व दानग्रह का निर्माण कराया था। आगे चलकर कुषाण तथा गुप्त शासको ने भी बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसारके लिए कौशांबी में अनेकों कार्य किया। जो पुरातात्विक दृष्टिकोण से विशिष्ट महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करते हैं

6. पिपरहवा:-

पिपरहवा उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर ज़िले के मुख्यालय से लगभग 22 किलोमीटर उत्तर दिशा में स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण बौद्ध पुरास्थल है। यह क्षेत्र प्राचीन कपिलवस्तु (शाक्य गणराज्य की राजधानी) के निकट माना जाता है। पिपरहवा स्तूप की पहचान से बौद्ध जगत में एक नया अध्याय जुड़ा, क्योंकि यहाँ ऐसे अवशेष प्राप्त हुए जिन्हें बुद्ध के संबंध में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।पुरातत्व विभाग के अनुसार यह स्थल बुद्ध की अस्थियों के उस अंश का समाधि स्थल रहा होगा जो उनके अपने शाक्य वंश को दिया गया था। इस स्थल के भीतर एक विशाल स्तूप, कई मठों के खंडहर और एक संग्रहालय भी स्थित हैं। पिपरहवा स्तूप की खोज का सर्वप्रथम श्रेय ब्रिटिश अधिकारी डब्ल्यू. सी. पेप्पे तथा पी. सी मुख़र्जी (1896) को दिया जाता है। इसके बाद 1961 में डी. मिश्रा तथा सबसे विस्तृत पैमानें पर के. एम श्रीवास्तव के द्वारा उत्खनन कार्य किया गया ।[41] डब्ल्यू. सी. पेप्पे कों यहां से 4½ फूट लम्बा, 3 फूट चौड़ा, 2¼ फूट ऊंचा ढक्कन सहित पत्थर का संदूक प्राप्त हुआ। जिसमें लकड़ी व रजत (Silver) पात्रों के अवशेष, अस्थियों (हड्डियों) के टुकड़े, स्वस्तिक, त्रिरत्न व अन्य प्रतीकों से उत्कीर्ण अनेक स्वर्ण-पत्र (Gold Foils), स्वर्ण पत्र पर अंकित दो स्त्री आकृतियाँ, सिंह व गज (हाथी) अंकित स्वर्ण-पत्र, स्वर्ण व रजत के पुष्प, सितारे और कलात्मक आकृतियाँ, छोटे सेलखड़ी कलश के ढक्कन[42] पर उत्कीर्ण अभिलेख आदि प्राप्त हुए हैं जो पुरातात्विक दृष्टि से बहुत से तथ्यों की पुष्टि करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ —

1. श्रीवास्तव, के. सी. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति. यूनाइटेड बुक डिपो, (2019 – 20), पृष्ठ सं. 235

2. शर्मा, कृष्णकान्त; कुमार, संजय। "गौतम बुद्ध की धार्मिक यात्राओं के प्रमुख स्थल।" कानपुर दार्शनिक, खंड 8, अंक 2 (2021)। न्यू आर्कियोलॉजिकल एंड जेनियोलॉजिकल सोसाइटी, कानपुर। ISSN 2348-8301।

3. कुमार, मनोरंजन एवं आत्मा प्रसाद सिंह। "सारनाथ : प्रसिद्ध बौद्ध स्थलपीठ – एक अध्ययन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज़ (IJRAR), खंड 3, अंक 2, जून 2016। www.ijrar.org

4. बंगाल एशियाटिक सोसाइटी जनरल 1954, पृष्ठ संख्या – 469

5. श्रीवास्तव, के. सी. प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति. यूनाइटेड बुक डिपो, (2019 – 20), पृष्ठ सं. 246

6. शर्मा, कृष्णकान्त; कुमार, संजय। "गौतम बुद्ध की धार्मिक यात्राओं के प्रमुख स्थल।" कानपुर दार्शनिक, खंड 8, अंक 2 (2021)। न्यू आर्कियोलॉजिकल एंड जेनियोलॉजिकल सोसाइटी, कानपुर। ISSN 2348-8301

7. रामस्वरूप राकेश, प्राचीन बौद्ध स्थल, सम्यक साहित्य प्रकाशन, 431/ ए फरीदपुरी पश्चिमी पटेल नगर दिल्ली 110008, प्रथम संस्करण 11 मई 1998 , पृष्ठ संख्या – 143

8. कुमार, मनोरंजन एवं आत्मा प्रसाद सिंह। "सारनाथ : प्रसिद्ध बौद्ध स्थलपीठ – एक अध्ययन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज़ (IJRAR), खंड 3, अंक 2, जून 2016। www.ijrar.org

9. बी. मजूमदार , पृष्ठ 24

10. ए गाइड टू सारनाथ दिल्ली, 1957

11. आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया, पृष्ठ 43.

12. बी मजूमदार, पृष्ठ सं. 25

13. आर्कियोलॉजी सर्वे आफ इंडिया, पृष्ठ सं. 97

14. तथेव, पृष्ठ सं. 26

15. कुमार, मनोरंजन एवं आत्मा प्रसाद सिंह। "सारनाथ : प्रसिद्ध बौद्ध स्थलपीठ – एक अध्ययन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज़ (IJRAR), खंड 3, अंक 2, जून 2016। www.ijrar.org

16. सैमुअल बील, पृष्ठ सं. 297

17. आर्कियोलॉजी सर्वे ऑफ़ इंडिया, पृष्ठ सं. 78

18. थॉमस वॉटर्स, भाग– 2 , पृष्ठ सं. 47

19. कुमार, मनोरंजन एवं आत्मा प्रसाद सिंह। "सारनाथ : प्रसिद्ध बौद्ध स्थलपीठ – एक अध्ययन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज़ (IJRAR), खंड 3, अंक 2, जून 2016। www.ijrar.org

20. वहीं

21. आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया, पृष्ठ सं. 83

22. वहीं

23. आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया पृष्ठ सं. 68

24. तथेंव, पृष्ठ सं. 70

25. तथेंव, 1907 – 1908 पृष्ठ सं. 45

26. थामस वाटर्स, आन युवान च्याग्स इन इण्डिया, जिल्द दो. पृ 28

27. आकियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया (वार्षिक रिपोर्ट) 1910-11, पृ 64

28.देवला मित्रा, बुद्धिस्ट मानुमेण्टस (कलकत्ता, 1917), पृ 70

29.ए कनिघम, दि ऐश्येण्ट ज्योग्राफी ऑफ इंडिया (इण्डोलाजिकल बुक हाउस,वाराणसी, 4963) पृ 364

30. देवला मित्रा, ड्रब्द्धिस्ट यानुगेण्ट्स , पृ 7।

31. उद्धत, अभिलेख, वी.वी मिराशी, इन्सक्रिपशन्स ऑफ दी कलचुरि एरा' प्लेट दो, कार्पस इन्सक्रिप्सनम इण्डिकेरम, भाग़4 (उटकसण्ड, 4955) पृ. 375 और आगे |

32. ए.एस.आई.आर, भाग-48 पृ 75, इन्होने उल्लेख किया है कि इस उत्खनन मे मृण्मूर्तियों के अलावा कुछ नहीं मिला था।

33. देवला मित्रा, बुद्धिस्ट मानुमेंण्टस (कलकत्ता, 1917), पृ 71

34. ए. एम. बेहूरसह्म्य, श्रावस्ती, अनुवादक — वेदनाथ शास्त्री, (नई दिल्ली : भारतीय पुरातत्त्व विभाग, 1956),

35. वहीं

36. वहीं

37. सिंह प्रिया सेन, भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थल, आर. क़े ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा दिल्ली 110034 प्रथम

संस्करण जनवरी 2016, पृष्ठ सं. 42

38.वहीं

39. बौद्धि कृष्ण कुमार, भगवान बुद्ध जीवन उपदेश, सम्यक प्रकाशन 32/3 पश्चिम पुरी नई दिल्ली, 110063, चतुर्थ संस्करण 2011 पृष्ठ संख्या 78

40. वहीं

41. बौद्ध बोधाचारी शांति स्वरूप, महाकच्चायन, सम्यक प्रकाशन 32 / 3 पश्चिम पुरी नई दिल्ली 110063 प्रथमसंस्करण 2011, पृष्ठ सं. 44

42. वहीं